आ ग म न

अनंत विजय

मनस्विनी

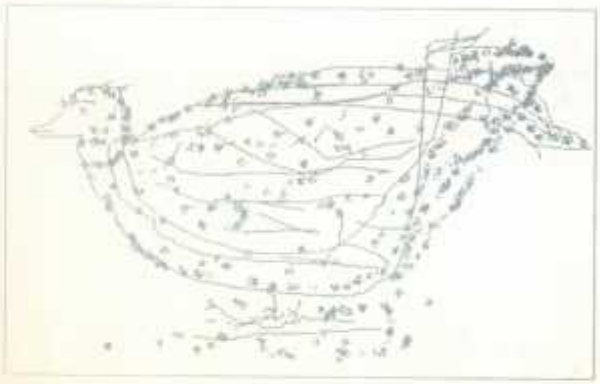

[illegible] के अब तक दो दर्जन से ज्यादा उपन्यास प्रकाशित हो चुके [illegible] सन् १९८९ में प्रकाशित उनके उपन्यास प्रोफेसर की डा[illegible] [illegible] गई तथा आज भी उन्हें उसी उपन्यास के लेखक के रूप में [illegible] है। सुधा शर्मा का मानना है है कि 'लेखन बनकर प्रसिद्ध [illegible] नहीं बन पाई, न पत्रकारिता की ऊँचाईयों को नापने के [illegible] निर्लिप्त हो पाया। लेखन बदस्तूर चलता रहा, कहीं [illegible] बनकर कहीं मन का मुक्त बनकर। इसलिए के [illegible]

[illegible] कहीं मुझे जाना है, जाने का प्रयोजन भी क्या है?'

[illegible] इस मनोवैज्ञानिक उपन्यास में लेखिका ने [illegible] [illegible] करना शुरू की सलाह और फिर बाद के अनुभव के [illegible] की मनोवैज्ञानिक मनः स्थिति का चित्रण किया है। इसमें [illegible] एक सही राह दिखाने वाली को पाने के लिए प्रयत्न करती [illegible] के बाद उसकी मानसिक स्थिति क्या होती है, का वर्णन [illegible] शैली में लिखे गए इस उपन्यास में अमूर्तन की देर [illegible] है जो मनस्विता को बखूबी कथित करती है। मुझे लगता [illegible] पुस्तक के नाम पर सुधा शर्मा के परिचय में सही ही लिखा [illegible]

[illegible] की पुस्तक आने में प्रकाशित होना मैंने छोड़ दिया है, व्यावसायिक [illegible] हूँ।' इसमें इस उपन्यास के प्रकाशन के बाद वह भी जोड़ा [illegible] साहित्य की मुख्यधारा छोड़कर अध्यात्म की धारा में [illegible] है तथा व्यावसायिक लेखन से मुक्त होकर सामाजिक [illegible] [illegible] सुधा शर्मा का यह उपन्यास उनके [illegible] की संख्या में ही वृद्धि करेगा एक उपन्यासकार के [illegible] में कोई इजाफा नहीं होने वाला है।

[illegible] / प्रकाशन संस्थान, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई [illegible] मूल्य : [illegible] रु.

पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा

आगामी दिनों में प्रकाशित होने वाली आलोक मेहता की इस पुस्तक के नाम से ही यह जाहिर हो जाता है कि लेखक क्या कहना चाहते हैं। आलोक मेहता तीन दशक से ज्यादा समय से पत्रकारिता में सक्रिय हैं। अपने इतने लंबे अनुभव के बाद आलोक मेहता ने पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा खींची है, जाहिर है इस रेखा में अनुभव की गहराई शिद्दत से महसूस की जा सकती है। पत्रकारिता एक ऐसा पेशा है जिसकी अब तक कोई तय आचार संहिता नहीं है। अगर कोई संहिता है तो वह है पत्रकार का स्वयं का विवेक या कुछ परंपरागत पेशागत अलिखित नियम। आजादी के बाद भारतीय प्रेस परिषद् ने समय-समय पर पत्रकारिता के लिए अनिवार्य न्यूनतम आदर्शों को रेखांकित अवश्य किया है पर वो कानून नहीं है जिसका पालन करना जरूरी हो। इस पुस्तक की भूमिका 'अपना अनुशासन' काफी रोचक तरीके से, विभिन्न उदाहरणों या व्यक्तिगत अनुभवों के साथ लिखा गया है। आलोक का मानना है — 'टेलीविजन के विस्तार के साथ प्रिंट मीडिया में सनसनी पैदा करने वाली खबरों का चलन बढ़ रहा है। इससे भी बड़ा खतरा यह है कि सारी पढ़ाई-लिखाई के बावजूद अपरिपक्वता के कारण नए पत्रकार गैर जिम्मेदाराना ढंग से रिपोर्टिंग और टिप्पणियाँ करने लगे हैं।' यह एक संपादक का अनुभव है जिससे उन्हें आए दिन रूबरू होना पड़ता होगा। मैं आलोक मेहता की उपरोक्त बातों से पूरी तरह सहमत हूँ। आज पत्रकारिता एक पेशे के रूप में युवाओं को आकर्षित कर रहा है, पर नई पीढ़ी बहुत जल्दी में है जो बिना मेहनत किए शार्टकट से सब कुछ हासिल करना चाहती है। शीघ्र प्रकाश्य आलोक मेहता की इस पुस्तक को अट्ठारह अध्यायों में विभाजित किया गया है। जिसमें आचार संहिता की आवश्यकता से लेकर भारतीय एडीटर्स की आचार संहिता, ब्रिटिश सोसाइटी ऑफ एडीटर्स की संहिता भारतीय प्रेस परिषद् द्वारा जारी किए गए मानक आचरण पर विचार किया गया है। इस पुस्तक में इसके अलावा हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियों, अपराध एवं चुनाव समाचार तथा संवाददाता सम्मेलन की सीमाओं पर भी गंभीरता से विचार किया गया है। संवाददाता सम्मेलन से लौट कर जिस तरह लोग आमतौर खबर लिखते हैं उसके लिए आलोक ने सटीक शब्द लिखा है — 'पोर्टिंग'। पुस्तक के अंत में कुछ बहुत ही रोचक केस स्टडी दिए गए हैं जिसमें साक्षात्कार की विश्वसनीयता पर तथा भारतीय एवं 'द वीक' का चर्चित प्रकरण भी है। कुल मिलाकर यह पुस्तक नए पत्रकारों के लिए बहुत ही उपयोगी तथा आम या अन्य पाठकों के लिए दिलचस्प जानकारियों से लबरेज है।

पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा / आलोक मेहता / सामयिक प्रकाशन दरियागंज / नई दिल्ली-११०००२ / मूल्य : १५० रु.